

# राष्ट्रीय कृषि उन्नयन परियोजना में रोसड़ा का चयन बेकार भूमि पर होगी खेती

रोसड़ा (ए.प्र.)। भारतीय कृषि अनुसंधान परिषद के सौजन्य से राष्ट्रीय कृषि उन्नयन परियोजना को लागू करने हेतु जिले के दो प्रखंडों का चयन किया गया है। रोसड़ा प्रखंड भी शामिल है। परियोजना में चीर की बेकार पड़ी जमीन का होगा इस्तेमाल।

इसमें सालों भर लहलहाएंगे पौधे और जमकर किसान करेंगे मछली पालन। सहकारी खेतों को मिलेगा बढ़ावा। समेकित कृषि प्रणाली के तहत किसानों को मिलेगा वैज्ञानिकों का सुझाव और तनकीकी सहायता। सरकार कराएगी सारे साधन उपलब्ध।

राजेन्द्र कृषि विश्वविद्यालय, पूसा के वरीय शस्त्र वैज्ञानिक डा. देवेन्द्र सिंह के नेतृत्व में दस वैज्ञानिकों का एक जत्था रोसड़ा पहुंचा। किसानों की सहमति पर वैज्ञानिकों ने प्रखंड के दो गांवों का फिलबल किया है चयन। ये गांव है कलवाड़ा और मब्बी। पहले चरण

में कलवाड़ा में गन्ना आधारित कृषि प्रणाली और मछली पालन पर दिया जायगा जोर। जबकि मब्बी में शुरू की जायगी पपीते की सामूहिक खेती। वैज्ञानिकों ने जांच के लिए मिट्टी के 50 नमूने भी किये इकट्टे। जांचोपरांत किया जायगा उपयुक्त प्रभेद एवं फसलों का चयन। कृषि वैज्ञानिक डा. देवेन्द्र सिंह ने बताया कि सहकारी खेती के लिए सर्वे का कार्य भी जारी है। खासकर वैसी जमीन जिसकी उत्पादन क्षमता शून्य है। उन्होंने बताया कि अगले चार वर्षों तक इस परियोजना पर कार्य चलेगा।

कलवाड़ा में किसानों की आपसी सहमति से शीघ्र ही टैंक बनाने का कार्य भी शुरू हो जायगा। उन्होंने बताया कि समस्तीपुर जिले में मात्र रोसड़ा और पूसा प्रखंड में इस परियोजना पर काम होना है। कृषि वैज्ञानिकों की टीम में प्रसार वैज्ञानिक डा. दिव्यांशु शेखर, रोग वैज्ञानिक डा. अवध पटेल, शस्य



- चार वर्षों तक चलेगा परियोजना पर कार्य
- सहकारी खेती के लिए सर्वे का काम जारी
- रोसड़ा के अलावा पूसा प्रखंड में भी होगा काम
- उत्पादन क्षमता शून्य भूमि पर होगी खेती

वैज्ञानिक डा. नवनीत, कार्मिंग सिस्टम के विशेषज्ञ डा. युगेश्वर सिंह आदि शामिल थे।